डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी
असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
लक्ष्मी - शालिनी महिला महाविद्यालय
पेझारी,अलिबाग

समकालीन महिला लेखन और नारी चेतना

बीसवीं सदी स्त्री उत्थान का यूग है। पुराने संस्कार, रूढी, परंपरा, सामाजिक बंधनों की शृंखला तोड़कर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। क्रीडा, विज्ञान, समाज, राजनीति, व्यवसाय, पत्रकारिता आदि सभी क्षेत्रों में वह अपना नाम रोशन कर रही है फिर साहित्य का क्षेत्र कैसे पीछे रह सकता है? प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, निरुपमा रेवती, शिवानी, कृष्णा अग्निहोत्री आदि लेखिकाओं ने स्त्री चेतना को लेकर साहित्य सृजन किया। इनके साहित्य में स्त्री विमर्श के नए आयाम मिले। आज की स्त्री स्वयं अपनी स्थिति की निर्मात्रि है, इसकी प्रचिति इन लेखिकाओं के उपन्यासों में मिलती है। उसी पर एक नजर...

हिंदी साहित्य में बहुचर्चित नाम 'प्रभा खेतान' का है। 'प्रभा खेतान' का साहित्य उनके अस्तित्व से शुरू होता है। उनको खामोश रहकर बहुत कुछ सहना पड़ा। अपने मुक्ति के लिए पुरुष की और देखना उसे कतई मंजूर नहीं था। इस दया भाव का वह तिरस्कार करती है। उन्होंने जाना कि स्त्री युगों - युगों से टूट रही है, बिखर रही है। स्त्री के इस अवस्था के लिए अशिक्षा, आर्थिक परावलंबत्व जिम्मेदार है इसलिए 'प्रभा खेतान' ने नारी की परंपरागत छवि में परिवर्तन लाया है।

'छिन्नमस्ता' की 9 वर्षीय 'प्रिया' अपने ही घर में असुरक्षित थी। 12 साल तक उसका बड़ा भाई प्रिया पर बलात्कार करता रहा। एक दिन साहस करके उसने छत से कूदने की धमकी भाई को दी परिणाम स्वरूप वह बलात्कार से तो बची लेकिन बदले में उसे मिला घृणा व तिरस्कार। भाई और बहन से कभी प्यार नहीं मिला और ना ही मां का वात्सल्य जिसकी वह हकदार थी। विवाह के बाद भी पति द्वारा उपेक्षा ही मिली। पति ने कभी अपनी पत्नी के सुख-दुख को नहीं बांटा वह कहती हैं "मैं और नरेंद्र उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव है जो कभी नहीं मिल सकते।"1 अपने अस्तित्व की स्थापना के लिए वह व्यवसाय करती है। उसकी बहन सल्लो दीदी उसे मदद करना चाहती है पर स्वाभिमानी प्रिया इनकार कर देती है। उपेक्षित सास और ननद का सहारा बनती है। नौकर ठाकरा एवं दाई को दी गई रुपयों की मदद उसकी मानवीय गरिमा को ऊंचा उठा देती है। अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक होने का मतलब यह नहीं स्त्री मात्र अपने स्वतंत्र को समझ कर अपने लिए ही जिए।

इसी उपन्यास की 'नीना' के माता पिता चाहते हैं कि वह ब्याह कर ले लेकिन नीना अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हैं। वह सोचती है जिंदा रहने और अपनी लड़ाई

स्वयं लड़ने के लिए यह जरूरी होता है कि हम अपमान और वंचना को भी याद रखें। 'अपने अपने चेहरे' की 'रमा' का मानना है कि विवाह पति बच्चे आदि से अलग हटकर भी स्त्री का अस्तित्व है। स्त्री की तलाश मात्र पुरुष नहीं उसकी अपनी पहचान भी है। 'रमा' एक विवाहित पुरुष 'राजेंद्र गोयंका' से प्रेम करती है जो उसे 20 वर्ष बड़े हैं लेकिन 'दूसरी औरत' को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। वह सभी सम्मानों से वंचित रहती है रमा की सारी कथा 'दूसरी औरत' होने की पीड़ा, अंतर्द्वंद की कथा है जो उसे बार-बार रुलाती है। वह सोचती हैं "मैं क्या हूं राजेंद्र के संदर्भ...? में अपने पैरों पर खड़ी स्वावलंबी स्त्री ...? यह कैसी जिंदगी में जी रही हूँ? मै छोड़ क्यों नहीं देती? मेरा परिचय क्या है? इस उम्र में? किसकी पत्नी, किसकी मां, किस घर की बहू? मै न सधवा न विधवा। अपनी ही आत्मतस्वीर इतनी धुंधली क्यों लगती है और कितने खूबसूरत तरीके से कोई धीरे से मांग में स्याही ऊंड़ैल जाता है। मेरे उजले ललाट पर स्याही मल देता है। मेरे ममता के आंचल में पैबंद गिनने लगता है।"2

समाज के इस तिरस्कार से वह भयभीत नहीं होती राजेंद्र को छोड़ फिर से जीने की कोशिश करती है। धीरे-धीरे एक नया संकल्प, नई शक्ति और चुनौती के रूप में उभरती हैं और अपने अस्तित्व को नए सिरे से परिभाषित करती हैं।

'चित्रा मुद्गल' ने अपने साहित्य में नारी मन का गहराई से चित्रण कर सशक्त लेखिका के रूप में अपना स्थान सिद्ध किया है। अपनी औपन्यासिक कृति 'एक जमीन अपनी' में विज्ञापन जगत के घातक वायरस के बीच संघर्ष करती दो युवतियां अंकिता और नीता की कथा अंकित है। 'अंकिता' एक ऐसी आधुनिक नारी हैं जो पुरुष के अहं और शोषक नीतियों से संघर्ष करती है। उसे मात्र देह बनकर जीना स्वीकार नहीं वह जीना चाहती है अपने लिए। सुधांशु के जुल्मों का सख्त विरोध कर उससे तलाक लेती है और अपनी जमीन खुद ढूंढती है जबकि नीता जैसी कई युवतियाँ जिनके पैरों के नीचे अपनी जमीन नहीं होती पुरुष के पशु बल का शिकार होती है और आखिरकार टूट जाती है अंकिता ने कभी नीता को समझाया था "तुम वर्जना हीनता के तर्क से लैस होकर पुरुष की उसी पिपासा को संतुष्ट करने जा रही हो जो स्त्री को भोग की वस्तु मानकर उसका इस्तेमाल करता आया है"3 परंतु नीता अपने आप को नहीं संभाल पाती और अंत में अपने नकारात्मक विचारों के कारण आत्महत्या करती हैं।

'कृष्णा अग्निहोत्री' का उपन्यास 'मैं अपराधी हूं' की केंद्र में है 'सीमा' अपनी मां, बहन रीमा और पति द्वारा भी बार-बार तिरस्कृत होती है। आर्थिक स्वावलंबन के कारण वह पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध कई स्तरों पर लड़ती हैं। अपनी बेटी 'उम्मी' का पालन पोषण करती है। बदकिस्मती से 'उम्मी' का विवाह नपुसंक व्यक्ति शीतल से हो जाता है इसलिए उम्मी से भी सीमा को अपमानित होना पड़ता है। शीतल के पशुवत व्यवहार के कारण उसे फटकारती है "तुमने मेरे हाथों में अदृश्य बेडिया डाल रखी है अब मैं इन्हें नहीं सह सकूंगी। अच्छी तरह समझ रही हूं कि इन्हीं मुझे ही काटना पड़ेगा। मैं

कोई चाबी का खिलौना नहीं जिसे तुम जब चलाओ फेकों और तोड डालो समझे।"4
उम्मी "इन्हें मुझे ही काटना पड़ेगा" यही नारी मुक्ति का उपाय मानती है।
वास्तव में 'सीमा' जैसी नारीयां पुरुषों के जुल्मों को सहती जाती है इसलिए वे खुद अपराधी है। वह प्रतिवाद करेगी तो जूल्म कम होगा। आगे चलकर उम्मी नौकरी कर आत्मनिर्भर हो जाती है और अपने मनचाहे पुरुष से संबंध भी रखती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री द्वारा स्त्री को सहारा देकर आत्मनिर्भर बनाने का नया दृष्टिकोण कृष्णा जी ने पाठकों के सामने रखा है इसलिए शांति के मुख से कृष्णा कहती है "जब सहारा मिलता है तभी तो मेरी जैसी औरत कुछ कर पाती। नारी अपनी मुक्ति के प्रयास में पुरुष बन जाए ऐसी कामना लेखिका की नहीं। उसका विरोध पुरुष को नहीं पुरुषी वर्चस्व से है।

'शिवानी' का 'कालिंदी' उपन्यास ग्रामीण परिवेश की नारी पर चित्रित हुआ है। इसमें लेखिका ने दहेज की समस्या को उठाया है। इस उपन्यास की नायिका 'कालिंदी' 'अन्ना' की पुत्री है 'देवेंद्र मामा' की सहायता के कारण वह डॉक्टर बनती है। उसका रिश्ता भी एक डॉक्टर से तय होता है परंतु लड़के के पिता निहायत कंजूस, लोभी और नीचे प्रवृत्ति का आदमी था। वह शादी के समय दहेज की मांग करता है। देवेंद्र मामा ने दहेज की रकम भी जुटा jरखी थी लेकिन जब कालिंदी यह जान जाती है तो अपना दुल्हन का श्रृंगार उतार फेंक रणचंडी का रूप धारण करती है और बारात को वापस भेज देती है। जो हुआ उसे भूलकर आगे बढ़ती है। कालिंदी दिल्ली के अस्पताल में अपनी प्रैक्टिस शुरू करती है। वह शिक्षित और आत्मनिर्भर होने के कारण विवाह को ठुकराने का साहस दिखा पाई। आत्म निर्भर हुए बिना कोई स्त्री स्वाभिमान से जी नहीं सकती।

'निरुपमा सेवती' की 'पतझड़ की आवाज' में आधुनिक नारी पर चित्रित उपन्यास है। उपन्यास की नायिका 'अनुभा' आधुनिकता का मुख्य लक्षण 'जागरूकता' मानती है' साथ में दिमाग का खुलापन होना नितांत जरूरी है। 'अनुभा' निम्न मध्यवर्गीय परिवार की नारी हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण उसे ऐसे मोहल्ले में रहना पड़ता है जो बदनाम है जिसके कारण रमनेश अनुभा को चाहते हुए भी अपनी दकियानूसी विचारों के कारण उससे शादी नहीं कर पाता। परंतु 'अनुभा' एक संघर्षशील महिला है अपने परिवार को आर्थिक संकट से उबारने के लिए नौकरी करती है। सी. के. एक भ्रष्टाचारी व्यक्ति है। वह 'अनुभा' के मजबूरी का फायदा उठाना चाहता है। वह 'अनुभा' के सामने कुछ शर्ते रखता है। पुरुषों के सम्मुख स्त्री की एक ही योग्यता होती है "उसकी सुंदरता और उसका शरीर" जिसे अनुभा की आत्मा स्वीकार नहीं करती। वह अपनी प्रतिभा और बुद्धि के सहारे आगे बढ़ना चाहती हैं। कुछ नारियों के गिरते जीवन मूल्यों से वह बहुत दुखी होती है। उसके मन में निरंतर आत्म चिंतन चलता है क्या महिलाओं के लिए नौकरी का अर्थ आत्मसम्मान को तिलांजलि देना होता है? वह सोचती है कि व्यक्ति ने जीवन में उपभोक्ता प्रवृत्ति को इतना प्राधान्य क्यों दे रखा है? इस प्रवृत्ति के कारण अधिकारी कर्मचारी के संबंधों में अर्थशास्त्र के डिमांड एंड सप्लाई के नियम काम

करने लगते हैं तो मनुष्य की सचमुच प्रतिभा और योग्यता का क्या मूल्य रह जाता? क्या इस प्रकार के वातावरण में नारी अपना सम्मान, अपनी अस्मिता, अपनी व्यक्तिगत पहचान बना सकती है? ऐसे अनेक प्रश्न अनुभा की आत्मा को कुरेदते रहते हैं।

'ममता कालिया' के उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स'के केंद्र में है 'कविता'। एक आधुनिक, सुशिक्षित, कामकाजी महिला होने के बावजूद कठपुतली की तरह उसे रहना पड़ता है। कविता पति के कदम से कदम मिलाकर चलना चाहती है परंतु पति संदीप एक आई ए एस अफसर होकर भी चाहता है कि पत्नी कितनी भी बुद्धिमान क्यों ना हो उससे दो कदम पीछे ही चले। आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होते हुए भी कविता पति के बिल्कुल अधीन है। संदीप चाहता है कि कविता हमेशा उस पर निर्भर रहें। उस पर अपना रौब जमाने के लिए वह कई हथकंडों का इस्तेमाल करता है। कभी उसके साथ झगड़ता तो कभी उस पर शक करता, उसे तड़पाना, उसकी नौकरी को कम आंकना उसे नीचा दिखाना, अपमानित करनाये तो उसका रोज का काम था। कविता हमेशा संदीप से आतंकित रहती। अंदर ही अंदर घुटती रहती। अंत में कविता अपने को ही बदलने की बात सोचती है। पुरुष की इसी घटिया मानसिकता के कारण नारी आहत होती है। भारतीय नारी की यही त्रासदि है। पुरुष प्रधान संस्कृति में पुरुषि वर्चस्व के कारण स्त्री की दयनीय दशा बनी है। कविता की तरह भारतीय स्त्री को अपने विद्रोह को दबाना पड़ता है।

नारी संबंधी अनेक समस्याओं को और स्त्री की सूक्ष्मतिसूक्ष्म भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास मैत्रयी पुष्पा ने किया है। उनके नारी पात्र प्रगतिशील विचारों द्वारा प्रेरित है। 'बेतवा बहती रही' की 'उर्वशी' साधारण में भी असाधारण और इसीलिए सब तरह से अभिशप्त रही। तिल - तिल मिटती रही चुपचाप। प्रेम, वासना,हिंसा,घृणा से भरा जीवन जीने के लिए विवश परंतु अंत में पूरे घर पर अपना अधिकार जमा लेती है। बचपन में जींव्हा पर अंकुश रखने वाली उर्वशी की वाकप्रगल्भता देखकर सब चकित हो जाते हैं। उसने लिया हुआ विजय की विधवा का उदय के साथ शादी का फैसला परंपरा के खिलाफ विद्रोह है। वह चाहती थी विजय की विधवा की दशा भी अपने जैसी ना हो। पति बरजोरसिंह जब बारात लेकर जाने के लिए इंकार करते हैं तो उर्वशी उन्हें करारा जवाब देती है "बेर बेर क्या पूछत? तुम नहीं जाओगे तो बड़ी बखरी से गजराज दादा जाएंगे। वह भी नहीं जाएंगे तो हम जाएंगे। गांव के लोग जाएंगे। जा घर के सब काम दादी नहीं संभाल रही? हम नहीं उठा रहे? फिर ब्याह भी सही। यह कार्य तो करना ही है।"5 इस प्रकार सनातन संघर्ष करके उर्वशी घर में अपनी अस्मिता बनाए रखते हैं।

'चाक' उपन्यास की सारंग के पास सब कुछ है परंतु से तलाश है अपने अस्तित्व की। समाज के नियमों के दायरे में वह जीना चाहते हैं। अपने पति रंजीत के अनुशासन को वह चुनौती देती है। पति के मनमाफिक चलो यह सारंग को कतई मंजूर

न था। घर और घर के बाहर भी वह अपनी पहचान बना लेती है। गांव में बढ़ते अत्याचार से उसका मन विद्रोह कर उठता है। गांव में चुनाव घोषित होते हैं तो सारंग प्रधान पद के लिए अपने ही पति के खिलाफ खड़ी होती है क्योंकि गांव में हो रहे अन्याय, अत्याचारऔर शोषण को उसे दूर करना था। "उसके सामने रस्सी के फंदे पर झूलती रुक्मिणी, कुएं में कूदने वाली रामदेई, नदी में समाधिस्थ नारायणी, घर के नीचे दबी रेशम और आग में जलने वाली गुलकंदी ये सब बेबस औरते मानो न्याय मांग रही थी।"6 सारंग गांव की औरतों का संगठन कर सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध बिगुल बजाती है।

'इदन्नमम' उपन्यास की 'मंदा' का जीवन - संघर्ष उम्र की तेरहवी साल से ही शुरू होता है। उसके सामने पहाड़ जैसी ढेर सारी समस्याएं हैं परंतु मंदा जानती है अपने हिस्से की लड़ाई दूसरों से नहीं लड़वा सकते और आपदाएं धकेल देने से खत्म नहीं हो जाती कुछ देर को ओझल होती है बस और फिर दूनी भयानकता से खड़ी होती है। मंदा के पास इन सारी समस्याओं को लांघने की क्षमता अवश्य है। गांव के गरीब, भोले - भाले, निरीह, दर्द से तड़पते लोग देखकर मंदा सोनपुरा गांव में परिवर्तन लाती हैं। गांव गांव का संगठन कर गांववालों को हिम्मत देती है। गांव के लिए ट्रैक्टर खरीद कर उनके रोजी-रोटी का प्रश्न हल करती है। राजनेता गांव की तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं यह देख कर आने वाले चुनाव पर बहिष्कार डालती हैं। मंदा का ग्राम उन्नति का कार्य देखकर 'कायले वाले महाराज' कहते हैं "मंदा इस गांव की ही नहीं इस क्षेत्र की भूमि सुता है। जो इस धरती की रग-रग को पहचानती है जैसे यहां के आदमी की धड़कन से चलती हो उसकी सांसे।मंदा अपने गांव के अधिकारों की लड़ाई लड़ती है। परिस्थितियों से जुझती मंदा यह साबित करती है कि 'यदि कठोर संकल्प किया जाए तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम आगे बढ़ सकते हैं और अपनी क्षमता का परिचय दे सकते हैं'।"7

'अल्मा कबूतरी' 'अल्मा' जिंदगी के कठोर अनुभवों में पक रही है। वह हर स्थिति को सीढी बनाकर दीवारें फाँदती 'कबूतरी' है। अल्मा का भाग्य उसके माथे पर नहीं देह की उठान और कटावों पर लिखा है। वह बेइज्जत होती रही लेकिन समाज कल्याण मंत्री श्री राम शास्त्री के गिरफ्त से मुक्त होने का मौका भी तलाशती रही। श्रीराम शास्त्री की सेज सजाने वाली रंभा होना अल्मा को मंजूर नहीं था। मन में बदले की ज्वाला, "आप लोगों ने हमारी दुनिया उजाड़ी है। मैं आपको उजाड़े बिना नहीं मरूंगी।"8 यह दृढ़ निश्चय उसे लढने का हौसला देता है। इसलिए वह कभी अपने पास चाकू रखती है तो कभी पिस्तौल। जल्द ही श्रीराम शास्त्री की हत्या होती है। अल्मा श्रीराम शास्त्री की विधवा के रूप में आगे आती है और उनकी चंदन चिता को मुखाग्नि देती है। पुरुष सत्ताक समाज में अंत्येष्टि क्रिया का अधिकार स्त्री को नहीं है। ब्राह्मणों, पंडितों की दृष्टि से यह सनातन धर्म का नाश था लेकिन अल्मा का विरोध करने की हिम्मत किसी के पास नहीं थी। अल्मा का यह साहस और दृढ़ता ही उसे 'बबीना विधानसभा'

की सीट पर नियुक्त कर देता है तथा वह समाज कल्याण मंत्री पद पर आरूढ़ हो जाती है।

इस प्रकार अल्मा का चरित्र साहस का परिचय देता है। कुछ लोग महज जीने के लिए जीते हैं मगर कुछ ऐसे हैं जो अपने जीने का मकसद खोज निकालते हैं ऐसा ही 'अल्मा' का चरित्र है।

इस तरह आज स्त्रियाँ समानता, मुक्ति, रोजगार आदि के संकुचित दायरे में नहीं सोचती। इससे ऊपर उठकर समूची मानवता के विकास के लिए वह प्रयत्नशील है। सोविएत नेता मिखाइल गोर्वाचौफ आंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन (23 जून 1987 - मास्को) में तीन अनमोल रत्नो वाली बात कही थी। "रोटी, किताब और स्त्री जीवन के तीन अनमोल रत्न है।" रोटी हमें जीवन दान देती है। किताबें पीढ़ियों को जोड़ती है और महिलाएं हमारे जीवन सूत्र को बांधकर रखने में अहं भूमिका निभाती है। इनमें से किसी एक के बिना भी जिंदगी बेमानी हो जाती है। एक उक्ति के अनुसार "यदि आप एक वर्ष के लिए योजना बनाते हैं तो फसल उगाएँ। यदि आप 30 वर्षों के लिए योजना बनाना चाहते हैं तो वृक्ष लगाएं । यदि आप 100 वर्षों के लिए दीर्घकालीन योजना बनाना चाहते हैं तो इंसान बनाएं। इंसान बनाने और उनके माध्यम से फिर से स्वर्णयुग लाने का महत्वपूर्ण काम महिलाएं ही कर सकती है।

आलोच्य उपन्यास

1. छिन्नमस्ता : प्रभा खेतान 2. अपने अपने चेहरे : प्रभा खेतान

3. एक जमीन अपनी : चित्रा मुदगल 4. मैं अपराधी हूं : कृष्णा अग्निहोत्री

5. कालिंदी : शिवानी 6 . पतझड़ की आवाज : निरूपमा सेवती

7. एक पत्नी के नोट्स : ममता कालिया 8. बेतवा बहती रही : मैत्रयी पुष्पा

9. चाक : मैत्रयी पुष्पा 10. इदन्नमम : मैत्रयी पुष्पा

11. अल्मा कबूतरी : मैत्रयी पुष्पा

सहायक ग्रंथ

आधुनिक समाज में स्त्री -- आशा रानी व्होरा

हिंदी उपन्यास की दिशाएं -- डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्ति चरित्र -- डॉ. सविता कीर्ते

प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार -- डॉ. उषा किर्ति राणावत

ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व -- डॉ. फैमिदा बिजापुरे

संदर्भ सूची

1 प्रभा खेतान -- छिन्नमस्ता पृष्ठ क्रमांक 131

2 प्रभा खेतान -- अपने अपने चेहरे पृष्ठ क्रमांक 60

3 चित्रा मुदगल --एक जमीन अपनी पृष्ठ क्रमांक 98

4   कृष्णा अग्निहोत्री -- मैं अपराधी हूं पृष्ठ क्रमांक 125

5   मैत्रयी पुष्पा -- बेतवा बहती रही। पृष्ठ क्रमांक 144

6 मैत्रयी पुष्पा -- चाक पृष्ठ क्रमांक 07

7 मैत्रयी पुष्पा -- इदन्नमम पृष्ठ क्रमांक 305

8 मैत्रयी पुष्पा -- अल्मा कबूतरी पृष्ठ क्रमांक 364